पत्रिका

रायपुर
सोमवार, 12 फरवरी 2018

रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के भू-विज्ञान अध्ययनशाला के विद्यार्थियों को हो रही परेशानी

जंग लगे उपकरणों से प्रैक्टिकल की खानापूर्ति

XPOSE रिपोर्टर
xpose.raipur@epatrika.com

विद्यार्थी जब पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के भू-विज्ञान अध्ययनशाला लैब में जाते हैं तो पहले जुगाड़ लगाते हैं कि प्रैक्टिकल कैसे करें। क्योंकि वहां रखे गए उपकरण इस कदर पुराने हो गए हैं कि प्रैक्टिकल की सफलता भी संदेह के घेरे में रहती है। बाजार में अत्याधुनिक मशीनें उपलब्ध होने के बावजूद यहां सालों पुरानी मशीनों से किसी तरह काम चलाया जा रहा है। लैब में पहले पायदान पर उपयोग में आने वाली स्टोन सैम्पल कटर पुरानी हो चुकी है। इस मशीन के जरिए पत्थर काटने में पूरी ताकत लगानी पड़ती है। छात्रों को फील्ड वर्क के लिए भी प्रैक्टिकल के उपकरण नहीं दिए जाते हैं। पिछले माह 10 जनवरी में द्वितीय वर्ष के पीजी विद्यार्थी बालाघाट गए थे। उस दौरान लैब अटेंडेंट के छुट्टी पर होने के कारण उपकरण लेने में भारी मशक्कत करनी पड़ी।

रॉ कटर मशीन की रिपेयरिंग के लिए विवि प्रशासन से स्वीकृति मिल चुकी है। कटर ब्लेड यहां नहीं मिलता। इसके लिए आगरा में एक फर्म को ऑर्डर दिया गया है। जो क्लेनामीटर हमारे पास है, वह बेसिक जानकारी के लिए उपयोगी है। छात्रों के बीच माइक्रोस्कोप की शेयरिंग की जाती है।

प्रो. निनाद बोधनकर,
एचओडी, भू-विज्ञान अध्ययनशाला, रविवि

सैंपल कटर मशीन बार-बार होती है खराब

भू-विज्ञान लैब में जो रॉ कटर सेंपल मशीन है, वह अक्सर खराब ही रहता है। कभी रॉ फिट नहीं बैठती, तो कभी वाटर सप्लाई की दिक्कत आती है। द्वितीय वर्ष के छात्र दुलेश्वर यदु ने बताया कि मशीन बार-बार खराब होती रहती है। इसकी कई बार रिपेयरिंग कराई चुकी है।

32 स्टूडेंट के लिए सिर्फ 8 माइक्रोस्कोप

अध्ययनशाला में 32 विद्यार्थियों के लिए 12 माइक्रोस्कोप है। एक माइक्रोस्कोप से दो से तीन स्टूडेंट को काम चलाना पड़ता है। इस वजह से विद्यार्थियों को प्रैक्टिकल के लिए पूरा समय नहीं मिल पाता।

हेमर में जंग, छूटता है हेंडल

हेमर का उपयोग स्टूडेंट फील्ड में पत्थर तोड़ने के लिए करते है। इसके बाद उन पत्थरों का सेंपल लिया जाता है। अभी लैब में जो हेमर है, उनमें से अधिकतर में जंग लगा है। उनके हेंडल भी निकल जाते हैं।

क्लेनामीटर हो चुका पुराना, नए की जरूरत

भू-विज्ञान द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने बताया कि लैब में जो क्लेनामीटर है, वे काफी पुरानी हो चुकी है। बाजार में अत्याधुनिक क्लेनामीटर उपलब्ध है। इसके बावजूद सालों पुरानी मशीन से काम चलाया जा रहा है।